रात्रिक्लास 13/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ऐसा शोभनिक सतसंग कहाँ होगा। और फिर पवित्रता का भी है। यह है नई दुनिया के लिए ज्ञान। और तो कोई देगा ही नहीं; क्योंकि कहते हैं कलियुग पुरानी दुनिया में अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। भगवान तो आवेगा ही पुरानी दुनिया में। नहीं तो भगवान क्या आकर करे। बुलाते भी हैं हम पतित बने हैं आओ। कबसे पतित बने हैं यह तुम जानते हो। बच्चों को समझाना है यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। वह तो सृष्टि के रच(यिता) बिगर कोई जानते ही नहीं। वह रचयिता बाप ही सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का नॉलेज देते हैं। 84 का चक्र कैसे फिरता है, कैसे मनुष्य वृद्धि को पाते हैं। सृष्टि की आयु में बहुत थोड़ी अन्त में फिर बहुत हो जाते हैं। बाप रचयिता और यह है रचना। बाप कौन है? सृष्टि का चक्र कैसे चलता है इसको जानने से चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। घर में भी मित्र सम्बन्धी आदि होते हैं। तो समझा सकते हो। जो जानते हैं, समझते हैं इनसे बहुतों का कल्याण होगा, तो वह सर्विस करते हैं। बच्चे भी सर्विस करते हैं। दिल में यह तो है मैं जो जानता हूँ यह भी जान जावे। विश्व का मालिक बन जावे। विश्व के मालिक यह देवी देवताएँ ही थे। बैज तो पड़ा हुआ है। बहुत संस्थाएँ हैं जिनकी कुछ न कुछ निशानी होती है। तुम्हारी यह है देवता कुल की निशानी। मनुष्य से देवता कैसे बनते हैं वह भी बच्चों का समझाना है। पूज्य देवताएं जो थे वह पुजारी कैसे बने, फिर पूज्य कैसे बनते हैं यह कहानी है। जो कुछ समझते ही नहीं हैं वह क्या करेंगे। किसका कल्याण कर न सके। स्त्री अच्छी तो पुरुष भूटू। कहाँ पुरुष अच्छा है तो स्त्री भुटू। तुम अपना नाम बताओ तो भी वन्डर खावेंगे। बाप ने ही ऐसे ही वन्डर फुल नाम रखे। निराकार भगवान नाम कैसे रखेंगे। साकार सिवाय तो रख न सके। तो कैसे रखा? तुमसे पूछता हूँ। शिवबाबा ने तुम्हारा नाम कैसे रखा? (संदेशी पुत्री द्वारा) संदेश पुत्री को किस(ने) दिया? (शिवबाबा ने सम्पूर्ण ब्रह्मा द्वारा दिया) प्रदर्शनी आदि में तो आते ढेर ही हैं; परन्तु यह तो बच्चे समझ(ते) हैं इतना ऊँच पद पा नहीं सकेंगे। तुमको प्रजा चाहिए ना। पाई पैसे की प्रजा चाहिए ना। यह है दुःखधाम। वह सुखधाम। वहाँ थोड़े मनुष्य और एक राज्य होगा। जो मनुष्य एकता चाहते हैं; परन्तु समझते नहीं हैं। वन राज्य था तब तो शान्ति थी। यह किसको पता नहीं है। अभी तुम समझाते हो। कल्प पहले न जाना होगा तो नहीं जानेंगे। विनाश में खत्म हो जावेंगे। तुम जानते हो हम मृत्युलोक से अमरलोक में ट्रान्सफर होते हैं। यह पढ़ाई है ही भविष्य नई दुनिया के लिए। सो तो सिवाय बाप के और कोई पढ़ा न सके। किसको पता ही नहीं। यह पुरुषोत्तम संगमयुगी है। तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियां की जहाँ सेन्टर्स है तुम कहो हम पढ़ते ही हैं भविष्य के लिए। वह हमारा बाप, टीचर, गुरु भी है। ऐसा मनुष्य कोई हो न सके। कैसे बाबा, कैसे गुरु, कैसे टीचर है बताना होता है ना। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। बहुत अच्छी रीत युक्तियां निकाल और समझाना होता है। बच्चे तो यह समझते हैं याद की यात्रा सिवाय बेड़ा पार हो न सके। राजधानी में हाईएस्ट, लॉएस्ट तक सभी पद होते हैं। बच्चे समझते हैं हम ट्रान्सफर होंगे सो ऊँच जरूर होंगे। जो समझते हैं वह ..... पद। न समझते हैं तो नम्बरवार पद पावेंगे। अभी तुम समझदार अकलमन्द बनते हो। रावण के थप्पड़ से बिल्कुल नीच बन गये हैं। यह है तमोप्रधान दुनिया। वर्थनॉट अपेनी। क्योंकि यह सभी भस्म हो जावेंगे। कुछ भी न रहे(गा।) वह थोड़े ही समझते हैं कि यह हाल होगा। तुम जानते हो। वेदों आदि में कोई भी शास्त्र है नहीं जिसमें र(चयिता) और रचना की आदि–मध्य–अन्त का ज्ञान हो। एक भी नहीं। यह वेद–शास्त्र आदि सभी हैं भक्तिमार्ग के। जो ..... दुर्गति को पा लिया है। अभी बाप कहते हैं अपन को आत्मा (समझ) मुझे याद करो। तुम पार्टधारी हो ना। यह भी बाप समझाते हैं आत्मा कैसे शरीर में आती है। पार्ट बजाती है। कितना छोटा–सा रॉकेट है अर्थात् कितना तीखा है। सेकण्ड में जाकर पहुँचता है। आत्मा क्या है एक भी मनुष्य नहीं जानते। भल वेद–शास्त्र आदि पढ़ा हो; परन्तु जानते कुछ भी नहीं। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।